

विकिरण से पैदा प्रदूषण की स्थिति भयावह है जो जीव जगत के लिए खतरे की घंटी है। दुखद पहलू यह है कि इस प्रकार का प्रदूषण आधुनिकता की देन है। रोचक मुद्दा यह भी है कि यह सृजन और संहार दोनों से जुड़ा है। जहां एक ओर विकिरण से जुड़े विभिन्न स्रोतों का प्रयोग बतौर चिकित्सा, खाद्य पदार्थ सुरक्षा, उद्योग आदि में हो रहा है वहीं युद्ध की विधिषिका और प्रदूषण का कहर भी इसका दूसरा पहलू उजागर करता है। देश की राजधानी दिल्ली में 12 अप्रैल 2010 की रेडिएशन प्रदूषण की घटना इसका ताजा उदाहरण है जो भूल और चूक की देन है। प्रस्तुत है एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट।

कुलदीप शर्मा

खा ली डिब्बा, खाली बोतल, टीन-टब्लर, कबाड़-कचरा खरीदने की गुहार करते फेरी वाले हर शहर में मिल जाएंगे। ये छोटे कबाड़ी इधर-उधर का व्यर्थ खरीद बड़े कबाड़ी को पहुंचा देते हैं। रोचक बात तो यह है कि आज कबाड़ से रोजगार की जुगाड़ बड़े शहरों में इस हद तक पनप रही है कि पूरे के पूरे बाजार कबाड़ के माल से पटे पड़े हैं। दिल्ली के मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में एक हिस्सा ऐसे ही कबाड़ बाजार का है जिसे 'जंक मार्केट' नाम दिया गया है। बहुत कुछ आता है यहां, देशी भी विदेशी भी। 12 अप्रैल 2010 को क्षेत्र के स्क्रेप डीलर श्री दीपक जैन ने फरीदाबाद से 'बेकार की

श्रेणी' का माल खरीदा। इसमें एक ऐसा डिब्बानुमा कंटेनर था जो बंद था, खोलने पर भी सहजता से न खुला। दो जून की रोटी जुटाने आए एक मजदूर को खोलने का आदेश हुआ। उसने मुस्तेदी से कंटेनर खोला, उसे क्या मालूम था कि इसमें बंद विकिरण का जिन्न उसे ही नहीं, आसपास खड़े लोगों को भी अपना निशाना बना लेगा। सिमसिम खुलते ही कर्मचारी के बाल झड़ने लगे, त्वचा बदरंग हो गई।

विकिरण सृजन का आधार

विकिरण द्वारा गंभीर जानलेवा प्रदूषण असल में एक समस्थानिक आइसोटोप कोबाल्ट-60 था। यह एक रेडियो सक्रिय तत्व है जो रेडिएशन देने के लिए एक महत्वपूर्ण और कारगर स्रोत है। परीक्षणों में पाया गया है कि यह धातु विकिरण 'मेटल रेडिएशन' के रूप में अबाध गामा किरणों का निकास करता है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में दो वैज्ञानिकों ने विकिरण के सृजनात्मक रूप, विशेषकर चिकित्सा में प्रयोग के दावे पहली बार किए। वर्ष 1922 में जे मुलर ने और 1927 में स्टैडलर ने। हालांकि यह खोज स्टैडलर की थी मगर इसमें से नोबेल पुरस्कार झटका मुलर ने। इसी शृंखला में वर्ष 1938 में वैज्ञानिक जॉन लिविंग गुड और ग्लेन सीबोर्ग ने कोबाल्ट-60 को खोज निकाला। प्रारंभ से ही इसका प्रयोग खदान में काम आने वाले कोबाल्ट के अयस्क के रूप में किया जाता है। प्राचीन इतिहास खंगाला जाए तो तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व कोबाल्ट के इस स्वरूप का प्रयोग मिस्र में मूर्तिकला में किया जाता था तो वहीं फारस में तन पर सजते गहनों के निर्माण में भी किया





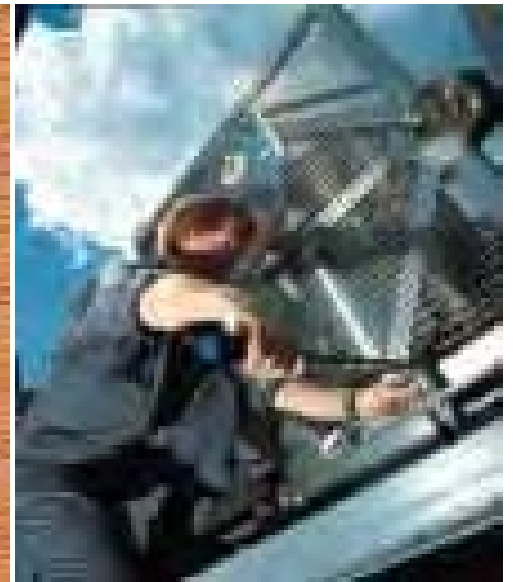
शरीर में चोरी-छिपे पनपते रोगों की धर-पकड़ के लिए नाभिकीय चिकित्सा का प्रयोग किया जा रहा है। हालांकि एक्स-रे के सफल आविष्कार के बाद से ही इसका प्रयोग चिकित्सा जगत में किया जाने लगा था। परंतु यह केवल शरीर की झलक दिखाने तक ही सीमित था

जाता था। एशियाई देशों में चीन जैसे देश भी इसका प्रयोग अति प्राचीन समय से करते आए हैं। आज की बात कहें तो उद्योग क्रांति को जन्म देते सभी देश कोबाल्ट-60 का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं। सच पूछिए तो इसे बतौर मेटल डिटेक्टर भी प्रयोग किया जा रहा है। बड़े उद्योग में धातु की संरचनात्मक कमी-वैशी को कोबाल्ट-60 के सहारे ही ज्ञात करते हैं। यह एक्स-रे प्रक्रिया से मेल खाते इंडस्ट्रियल रेडियोग्राफी का अंग है। यही नहीं, इस तत्व का प्रयोग लेवलिंग डिवाइस में भी किया जाता है।

बेहतर चिकित्सा की किरणें

शरीर में चोरी-छिपे पनपते रोगों की धरपकड़ के लिए नाभिकीय चिकित्सा का प्रयोग किया जा रहा है। हालांकि एक्स-रे के सफल आविष्कार के बाद से ही इसका प्रयोग चिकित्सा जगत में किया जाने लगा था। परंतु यह केवल शरीर की झलक दिखाने तक ही सीमित था। मगर इधर भारत सहित कई देशों में नाभिकीय चिकित्सा की शुरुआत की गई है। मोटे तौर पर यह चिकित्सा विभिन्न किरणों के प्रयोग से ही जुड़ी हुई है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि देश-विदेश के चिकित्सा शोध केन्द्रों, अस्पतालों और रेडियोथेरेपी को सही अंजाम देने के लिए किया जाता है।



दिल्ली की घटना के पीछे स्रोत कुछ भी रहा हो, मगर कोबाल्ट-60 से पैदा विकिरण ने अपना कहर दिखाया। मायापुरी में हुई इस घटना के कारण एक क्षेत्र पूरी तरह से रेडिएशन की चपेट में आ गया है। विशेषज्ञों के अनुसार इसका प्रभाव अभी तक सीमित नहीं है, सालों-साल रहेगा

इसमें दो राय नहीं कि यह रोगों से लड़ाई लड़ने का अचूक साधन है। दिमाग में पनपते आर्बुद (ब्रेन ट्यूमर) पर चोट करनी हो या विकृत रक्त वाहिकाओं की तसल्लीबख्श मरम्मत हो, कोबाल्ट-60 कारगर पाया गया है। चिकित्सा में रेडियो न्यूक्लाइड्स का प्रयोग किया जाता है जिससे विभिन्न अंगों, ऊतकों और कोशिका में ऊर्जा जमा हो जाती है। इसी आधार पर रोग की जांच-पड़ताल की जाती है। इसी शृंखला में कैंसर के

इलाज के दावे भी आए हैं। असल में रोग प्रभावी कोशिकाएं जब अपना फैलाव करती हैं तो उसके चारों ओर के दायरे की कुछ कोशिकाओं को विकिरण द्वारा मार दिया जाता है ताकि उनके विस्तार को विराम लगे। मगर उभरता खतरा यह है कि विकिरण यह नहीं देखता कि किस कोशिका की कांट-छांट किस हद तक करनी है। अतः खतरा यह भी रहता है कि सजीव कोशिकाओं में जीवन के हरकारे कुछ गुणसूत्रों में उलट फेर

हो जाती है और नया खतरा पैदा हो जाता है। यह स्थिति विकिरण मात्रा की अधिकता के कारण जन्मती है।

विकिरण के बढ़ते खतरे

दिल्ली की घटना के पीछे स्रोत कुछ भी रहा हो, मगर कोबाल्ट-60 से पैदा विकिरण ने अपना कहर दिखाया। मायापुरी में हुई इस घटना के कारण एक क्षेत्र पूरी तरह से रेडिएशन की चपेट में आ गया है। विशेषज्ञों के



इसमें एक ऐसा डिवानुमा कंटेनर था जो बंद था, खोलने पर भी सहजता से न खुला। दो जून की रोटी जुटाने आए एक मजदूर को खोलने का आदेश हुआ। उसने मुस्तैदी से कंटेनर खोला, उसे क्या मालूम था कि इसमें बंद विकिरण का जिन्न उसे ही नहीं, आसपास खड़े लोगों को भी अपना निशाना बना लेगा। सिमसिम खुलते ही कर्मचारी के बाल झड़ने लगे, त्वचा बदरंग हो गई

कोख पर भी चोट

कुछ साल पहले ब्रिटेन में प्रवेश से पूर्व कौमार्य परीक्षण की शुरुआत की गई थी। इस परीक्षण के लिए एक्स-किरणों का प्रयोग किया गया था। बाद में इसे बंद कर दिया गया। इसका आधार भी यही था कि विकिरण की मात्रा कई दशाओं में खतरे पैदा करने लगी थी।

परीक्षण बताते हैं कि विकिरण प्रदूषण के खतरे गर्भस्थ शिशु को ही नहीं डिम्ब कोशिका तक को बरबाद करने से नहीं चूकते। विकिरण के कारण हुई इस छेड़छाड़ का पता तब तक नहीं चल पाता जब तक कि वह दूसरी पीढ़ी में न पहुंच जाए और जब पता चलता है तो बहुत देर हो चुकी होती है। आने वाली संतान तब विकृत पैदा होती है। यह विकृति शारीरिक-मानसिक दोनों ही दशा में होती है।

• कुश

अनुसार इसका प्रभाव अभी तक सीमित नहीं है, सालों-साल रहेगा। जो मजदूर इसकी चपेट में आए उनमें बाहरी तौर पर जो प्रभाव हुए वह त्वचा से सम्बन्धित थे और त्वचा पर स्पष्ट हुए। इसके प्रभाव से शरीर में क्षीणता पैदा होती है जो बेहोशी और शून्य की स्थिति ले आती है, अंततः मृत्यु भी हो जाती है।

कोबाल्ट-60 के भीषण प्रभाव को यकृत यानी लिवर और किडनी में भी पाया गया है। यह उसके संचालन को छिन्न-भिन्न कर डालता है। इसी प्रकार यह हड्डियों को जकड़ते ऊतकों की पकड़ भी ढीली कर डालता है। हालांकि आज शल्य चिकित्सा के डर को रोकने में विकिरण कारगर सिद्ध हुआ है, मगर इसके खतरे भी कम नहीं हैं। हमारे देश में इस प्रकार की चिकित्सा इसलिए भी खतरा पैदा करती है चूंकि इसके निर्धारित मापदण्डों को सही तौर पर नहीं अपनाया जाता है। चिकित्सकों ने विभिन्न स्तरों पर विभिन्न रोगों को देखते हुए विकिरण की मात्रा को स्वदेशी तरीके से निर्धारित कर लिया है।

कुछ समय पूर्व अमरीकी नाभिकीय चिकित्सा विज्ञान संस्था की मेडीकल इंटरनल रेडिएशन डोज कमेटी (एम आई आर डी) द्वारा शरीर में विकिरण के प्रयोग, जमाव और उनके आकलन के लिए एक विधि विकसित की गई है। इस विधि से विकिरण की सही मात्रा का आकलन संभव पाया गया है। इससे मोटे तौर पर यह जाना जा सकता है कि शरीर के विभिन्न स्थानों पर विकिरण की कितनी मात्रा की जरूरत है। यह विधि उसके आकलन को नब्बे प्रतिशत तक बताने में सफल है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान (एम्स)

दबे पांव आता विकिरण

वैज्ञानिक भाषा में प्रदूषण को आधार देते विकिरण दो प्रकार के पाए गए हैं। पहला आयनीकृत और दूसरा अन-आयनीकृत। इनमें आयनीकृत विकिरण वह है जो पदार्थों से क्रिया कर आयनित जोड़े उत्पन्न नहीं करते हैं। इस प्रकार के विकिरण अनेक इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से जुड़े उपकरणों से पैदा होते हैं। हैरान करती बात है कि इस प्रकार के विकिरणों का प्रदूषण हमें सहज ही असर कर जाता है। असल में यह प्रदूषण हम तक कॉस्मिक विकिरणों, खाद्य पदार्थों, पेय पदार्थों, वायु आदि द्वारा पहुंचता है। वह भी इतना दबे पांव कि हमें भनक भी नहीं लग पाती। यह प्रदूषण अपनी जड़ें शरीर में फैला देता है और कहर की शुरुआत हो जाती है। परीक्षणों में पाया गया है कि यह विषाक्तता सायनाइड जैसे विष से भी सौ गुना ज्यादा है। यह विकिरण न केवल मनुष्यों पर बल्कि सभी जीवों पर बुरा असर डालते हैं और गंभीर दशा में मौत धमा जाते हैं।

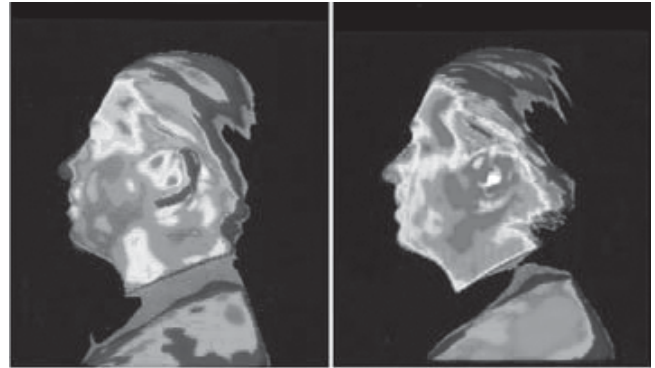
• कुश

द्वारा इस विधि को कारगर पाया गया है और अपनाया गया है। इसी आधार पर देश के प्रमुख 28 शहरों में 58 केंद्रों पर नाभिकीय विज्ञान की 35,000 के लगभग जांच की जा चुकी है। हमारे देश में इसका प्रयोग दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों में किया जा रहा है। इसके तहत थायरॉयड,

प्रकृति में समाया रेडिएशन

रोचक पहलू यह है कि प्रकृति में लगभग नब्बे प्रतिशत तक विकिरण समाया हुआ है — कभी सूरज से, कभी धरती की गोद से तो कभी बढ़ती गर्मी के कारण विकिरण जमता है। गरज यह है कि पृथ्वी पर पैदा ऊर्जा से जन्मी एक्स-किरणें, गामा-किरणें, अल्ट्रावॉयलेट किरणें विकिरण पनपाती हैं। ओजोन की झीनी होती चदरिया घातक किरणों को धरती में प्रवेश करने से पूरी तरह से नहीं रोक पाती है। इसका प्रभाव यदाकदा नजर आता है और भविष्य के खतरों को जन्म देता है। हालांकि इस प्रकार का प्राकृतिक विकिरण अधिक नुकसानदायक नहीं है मगर कब कहां कैसा खतरा पैदा कर दे, कहा नहीं जा सकता। मगर वहीं दूसरी ओर मानव जनित खतरे अपना कहर दिखाने से नहीं चूकते हैं। परमाणु बिजली घरों से रिसाव, चिकित्सीय उपकरणों, मोबाइल टावर आदि से पैदा विकिरण मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करता है।

• कुश



देश में बड़ी मात्रा में जीवधारियों और वनस्पतियों तक के लिए खतरनाक रेडियोधर्मिता पैदा होती है जो न केवल निर्धारित क्षेत्र को प्रभावित करती है अपितु इसका प्रभाव दूर-दूर तक जा पहुंचता है।

मस्तिष्क स्कैनिंग, अस्थि मज्जा यकृत, अम्याशय आदि की जांच-पड़ताल और चिकित्सा की जाती है।

परीक्षणों में पाया गया है कि विकिरण का सीधा प्रभाव कोशिकाओं को प्रभावित करता है जो कैंसर का खतरा बढ़ाता है। मायापुरी में कोबाल्ट-60 के विकिरण ने सीधे त्वचा पर चोट की और व्यक्ति विशेष की कोशिकाएं झुलस गईं। चौंकाती रिपोर्ट यह है कि देश में कैंसर के उछाल लेते आंकड़ों के पीछे रेडिएशन का गुप्तचुप कहर ही है। हाइ फ्रीक्वेंसी और लो फ्रीक्वेंसी रेडिएशन देर-सवेर कैंसर की सौगात देता है। इसके अलावा आनुवंशिक रोग, रक्त संबंधी विकार, त्वचा रोग आदि भी किसी न किसी रूप में रेडिएशन के कारण ही अपनी जड़ें जमा रहे हैं।

कोबाल्ट-60 तथा अन्य रेडिएशन स्रोतों से प्रभावित क्षेत्र लम्बे समय तक खतरों की घंटी बना रहता है। पाया गया है कि देश में बड़ी मात्रा में जीवधारियों

और वनस्पतियों तक के लिए खतरनाक रेडियोधर्मिता पैदा होती है जो न केवल निर्धारित क्षेत्र को प्रभावित करती है अपितु इसका प्रभाव दूर-दूर तक जा पहुंचता है। इससे जुड़े बड़े परीक्षणों में एक प्रकार की धूल पैदा होती है जिसे रेडियोएक्टिव डस्ट या रेडियोएक्टिव कॉल आउट कहा जाता है। अब चूंकि यह हवा से हल्की होती है अतः इसका प्रसार हवा द्वारा सहज ही हो जाता है।

जाहिर है कि विकिरण से पैदा प्रदूषण की स्थिति भयावह है जो संपूर्ण जीव-जगत के लिए खतरा है। विकिरण से जुड़ी घटनाएं महज इत्तफाक, नादानी या भूलवश कही जाएं मगर जब युद्ध इसी पर आधारित हो तो कहर सृष्टि के विनाश और मानव संस्कृति, जीव जगत को तबाह करने में कोई कसर न होगी। तब हीरोशिमा-नागासाकी की शृंखलाएं बनते देर न लगेगी और पल पल तिल तिल कर मौत पनपेगी।

(शेषांश पृष्ठ 29 पर)

पिछले दिनों

(पृष्ठ 13 का शेषांश)

गंदलाती गंगा गाथा

पतित पावनी गंगा अब स्वयं अपनी मुक्ति की गुहार कर रही है। गंगा के 'गले तक' रेडियो सक्रिय पदार्थों की पेट हो गई है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरन्मेंट स्टडीज में प्रकाशित ताजा रिपोर्ट कहती है कि गंगा के जल में कोबाल्ट, कैडमियम, क्रोमियम और निकल जैसे घातक प्रदूषणकारी तत्व खतरे की सीमा पार कर रहे हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि इन घातक तत्वों में कैडमियम और कोबाल्ट विशेष तौर पर फैलाव ले रहे हैं। कानपुर स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने भी गंदलाती गंगा की नब्ज टटोली है। विभिन्न स्तरों पर पानी का नमूना लेने के बाद वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि औद्योगिक कचरे के गंगा में निपटान के कारण गंगा का पानी विषाक्त तत्वों को समोए पारदर्शी नहीं रह गया है बल्कि गहरा नीला पड़ता जा रहा है। ज्ञात हो कि इस कचरे में भारी धातुओं की खासी मात्रा पाई जाती है। पता चला है कि प्रदूषणकारी तत्व घातक बीमारियां भी सौंप रहे हैं। यह भी पाया गया है कि कानपुर में गंगा का जल चमड़ा और अन्य उद्योगों से बहाए गए कचरे के कारण कई स्थानों पर काला भी हो रहा है। आंकड़ों के अनुसार गंगा नदी 2033 किलोमीटर लम्बी है जिसके पानी का बड़ा भाग गंदला रहा है। कभी गंगा किनारे रहने वाले गर्व महसूस करते थे। मगर अब यहां प्रदूषणकारी उद्योग लग जाने के कारण इसमें औद्योगिक कचरा घुलता जा रहा है, जिसमें गंगा का पानी प्रदूषणयुक्त व गंदला हो रहा है। सिंह भूमि में स्वर्ण रेखा नदी विभिन्न उद्योगों द्वारा बहाई गई छाड़ियों के जम जाने से गहराई और चौड़ाई में संकरी हो गई है वहीं यूरेनियम संयंत्र के आसपास के क्षेत्रों में रेडियो सक्रियता बढ़ जाने से वहां रोगियों, अपंगों और खून की कमी से पीड़ित बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है। गंगा ही नहीं यमुना, कृष्णा, कावेरी, साबरमती, नर्मदा, भीमा, ताप्ती, बाणगंगा, गोदावरी आदि भी विकिरण और अन्य प्रदूषणकारी तत्वों की चपेट में हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय का कबाड़ आफत की जड़

दिल्ली विश्वविद्यालय (डी यू) विकिरण के कारण अचानक चर्चा में



यह भी देखा जाए कि उनके रखरखाव, भण्डारण और निपटारे के नियमों में कोताही तो नहीं बरती जा रही।



बेतरीब कबाड़ लदान और फिर गंतव्य पर फेंक देना ढेर लगाना भी खतरे की घंटी बज जाने जैसा है। बात को अब सरकार ने समझा है और 'रेडिएशन पॉलिसी' बनाने की घोषणा की है।

आ गए। यहीं से निकले कबाड़ से मायापुरी में विकिरण का जिन पहुंचा था। विश्वविद्यालय के उपकुलपति द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार यह गलती उन्ही के यहां से हुई थी और कोबाल्ट-60 का कंटेनर मायापुरी के जंक मार्केट जा पहुंचा। इस दिशा में एटॉमिक एनर्जी रग्युलेटरी बोर्ड की (परमाणु ऊर्जा नियामक बोर्ड) वैज्ञानिक टीम ने विश्वविद्यालय से संबंधित प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया और वहां प्रयोग किए जा रहे रेडियो सक्रिय पदार्थों की स्थिति और उनके उपयोग की जांच की। इसके अलावा इस टीम ने विश्वविद्यालय के रसायन विभाग से कोबाल्ट-60 युक्त कबाड़ खरीदने वाले कबाड़ी की दुकान का भी निरीक्षण किया। जिस स्थान पर काण्ड हुआ, पता चला कि वहां कबाड़ डी यू से आया था जो कि मूलतः गामा रेज मशीन थी और लम्बे समय तक यूं ही रखी रही।

बात यहीं नहीं थमती, रिपोर्ट लिखे जाने तक डी यू की प्रयोगशाला से बतौर कबाड़ बेचे गए 200 गैस सिलिंडर्स की बात भी सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार इन सिलिंडर्स में कुछ में खतरनाक जानलेवा ज्वलनशील आर्सेन गैस की खासी मात्रा भी थी। यही नहीं, कुछ सिलिंडर्स में नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, फ्लोरीन, आदि हानिकारक गैसों भी भरी हुई थीं। गनीमत है अभी तक इन गैसों ने अपना असर नहीं दिखाया है और न कोई चौंकाती, दहलाती रिपोर्ट आई है।

इसमें दो राय नहीं कि हर विश्वविद्यालय और संबंधित संस्थानों व प्रयोगशाला में प्रयुक्त पुराने माल को

बतौर कबाड़ बेचा जाता है। आखिर उसे कब तक रखा जाए। मगर यह भी माना जाना चाहिए कि यूं ही बेच देना भी उचित नहीं। बेतरीब कबाड़ लदान और फिर गंतव्य पर लाकर यूं ही फेंक देना, ढेर लगाना भी खतरे की घंटी बज जाने जैसा है। बात को अब सरकार ने समझा है और 'रेडिएशन पॉलिसी' बनाने की घोषणा की है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के लेट-लतीफी पूर्ण रवैये और उसके कारण हुई कोबाल्ट-60 के विकिरण को देखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्लल ने सभी विश्वविद्यालयों को चेताते हुए कहा है कि इस बात पर कड़ाई से कार्यवाही की जाए और विश्वविद्यालय की हर प्रयोगशाला की जांच करते हुए उसमें रखे उन सभी पदार्थों को भलीभांति देखा जाए जो विकिरण का अंदेशा रखते हों। साथ ही यह भी देखा जाए कि उनके रखरखाव, भण्डारण और निपटारे के नियमों में कोताही तो नहीं बरती जा रही। इसी प्रकार दिल्ली सरकार द्वारा भी विकिरण की घटनाओं को भविष्य में रोके जाने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे हैं।

इलाज करते अस्पताल ही बीमार न कर दें
कोबाल्ट-60 के विकिरण से जुड़ी घटना में अस्पतालों को भी शक के घेरे में ला खड़ा किया है। ज्ञात हो कि अस्पतालों में कैंसर जैसे गंभीर रोगों पर काबू पाने के लिए विकिरण का प्रयोग किया जाता है। आप कितनी भी एहतियात बरत लीजिए, कचरा में गया व्यर्थ तो खतरा पैदा कर ही सकता है।

इसलिए उसके निपटान में विशेष चौकसी रखनी होगी क्योंकि जरा सी भी चूक बड़ी दुर्घटना को जन्म देगी।

दिल्ली और उसके आसपास के शहरों में कितने ही ऐसे छोटे-बड़े अस्पताल हैं जहां विकिरण से जुड़े उपचार होते हैं और अंततः बायोमेडिकल कचरा निकलता है। उसकी मात्रा इतनी अधिक है कि उनके पूरे-के-पूरे निपटान की सुविधाएं तक नहीं हैं। हैरान करती बात यह है कि दिल्ली में बहुत सा बायोमेडिकल कचरा प्रकाश में भी नहीं आ पाता और जो आता है उसके आधे की भी निपटान की सुविधाएं नहीं हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड इस प्रकार के कुल बायोमेडिकल कचरे के आधे के निपटान की व्यवस्था की बात करता है। मगर साथ ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में इस दिशा में बहुत कम सुविधाएं होने की बात करता है। वस्तु स्थिति को देखते हुए दिल्ली सरकार द्वारा यहां के अस्पतालों को विशेष दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं। इनमें स्पष्ट किया गया है कि एटॉमिक एनर्जी एक्ट (33 ऑफ 1962) और एटॉमिक एनर्जी एक्ट सन् 2004 जो कि रेडियो सक्रिय पदार्थों के निपटान से संबंधित है, का कड़ाई से पालन किया जाएगा। इसके अलावा इस प्रकार के सक्रिय पदार्थों का विवरण भी रखना होगा।

संपर्क सूत्र :

डॉ. कुलदीप शर्मा, 333, ग्रेट इंडिया अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 15, सैक्टर-6, द्वारका, नई दिल्ली-110 075
[ई-मेल : kuldeep@icar.org.in]